खण्ड-391, अंक-6
शनिवार, 27 फाल्गुन, शक संवत् 1910
(18 मार्च, 1989 ई0)

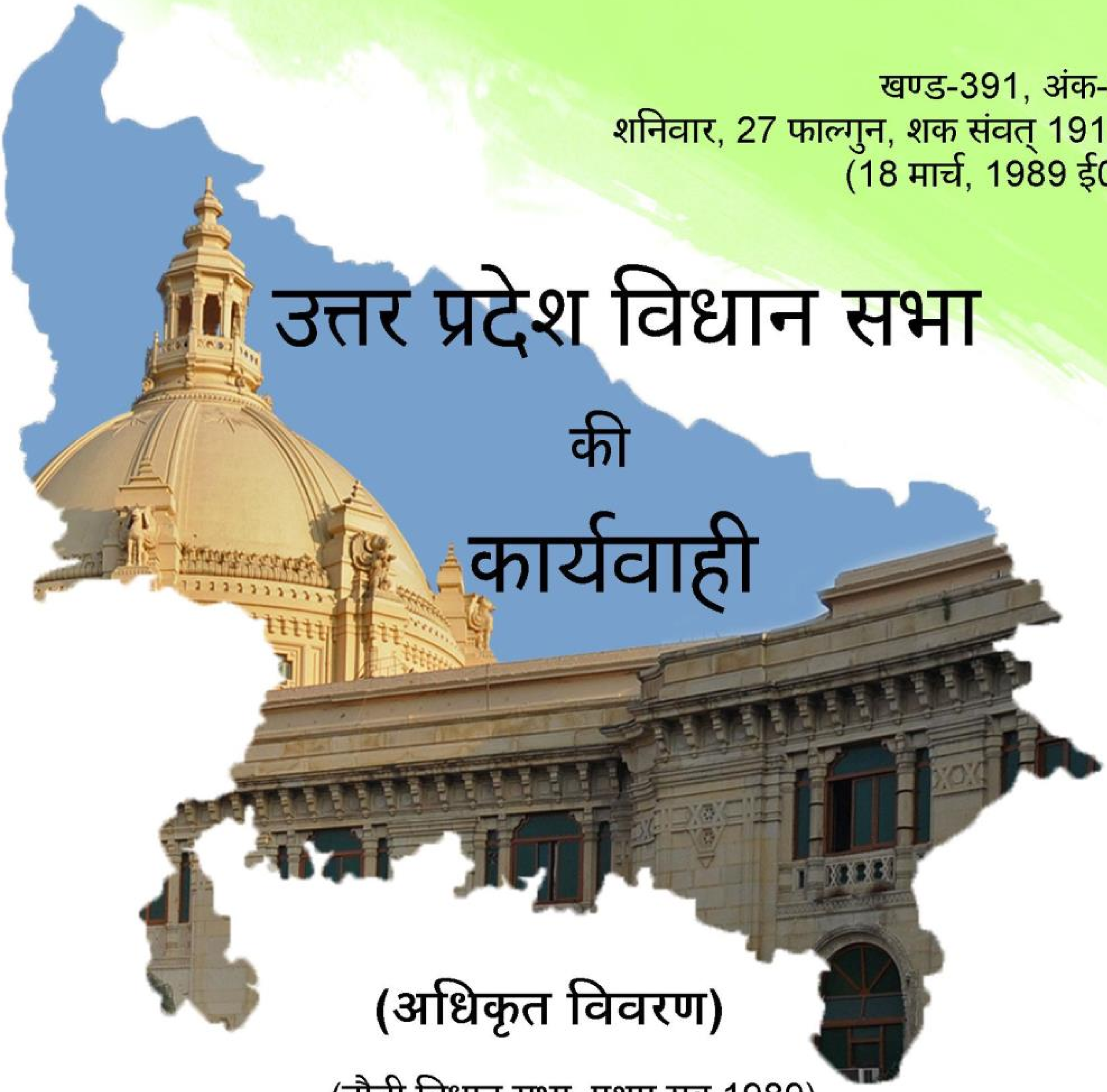

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(नौवी विधान सभा, प्रथम सत्र 1989)

खण्ड 391 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1989

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क
उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के निधन पर शोकोद्गार	1–13

विधान सभा उत्तर प्रदेश

बिहार विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, दिनांक 18 मार्च, 1989

विधान सभा की बैठक, सभा मण्डप लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष श्री नियाज हसन की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे।

अकबर अहमद (डम्पी), श्री (नैनीतल)
अचलसिंह, श्री (फतेहपुर)
अफजाल अन्सारी, श्री (गाजीपुर)
अमर नाथ सिंह, श्री (फतेहपुर)
अमीर आलम खां, श्री (मुजफ्फरनगर)
अम्बा प्रसाद वर्मा, श्री (बरेली)
अलमेलु अम्माल, कुमारी (बस्ती)
अशोक सेहरा, श्री (आगरा)
उदयवीर सिंह, श्री (शाहजहांपुर)
उमेश्वर प्रताप सिंह, श्री (गोण्डा)
कमलेश कुमार पाठक, श्री (इटावा)
काजी मोहिउद्दीन, श्री (सहारनपुर)
काशी सिंह ऐरी, श्री (पिथौरागढ़)
किरन पाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
कृष्ण दत्त उर्फ बालराज, श्री (फतेहपुर)
खान गुफरान जाहिदी, श्री (फतेहपुर)
गंगा स्वरूप भटनागर, श्री (सीतापुर)
चन्द्र सेन, श्री (जौनपुर)
चेतराम गंगवार, श्री (बरेली)
जय नारायण शर्मा, श्री (मेरठ)
जौहरी लाल त्रिवेदी, श्री (कानपुर)
दलजीत सिंह, श्री (रामपुर)
नारायण हरि शर्मा, श्री (अलीगढ़)
निर्भय पाल शर्मा, श्री (सहारनपुर)
निसार हुसैन, श्री (रमापुर)
पारसनाथ यादव, श्री (जौनपुर)
फागू चौहान, श्री (आजमगढ़)
बलदेव सिंह, कैप्टेन (अलीगढ़)
बलदेव सिंह आर्य, श्री (उत्तरकाशी)
बाबू राम यादव, श्री (मैनपुरी)
बुधपाल सिंह "खुर्जावाले," श्री (बुलन्दशहर)
ब्रहमदत्त द्विवेदी, श्री (फर्रुखाबाद)
भगवती प्रसाद, चौधरी (मिर्जापुर)
भगौती सिंह, श्री (लखनऊ)
मनोहर लाल, श्री (उन्नाव)
मलिक मोहम्मद कमाल यूसुफ, श्री (बस्ती)
महाराज सिंह, चौधरी (इटावा)
महावीर सिंह राणा, श्री (सहारनपुर)
महेन्द्र भाटी, श्री (गाजियाबाद)
मामपाल सिंह एडवोकेट, श्री (एटा)
मित्रसेन, श्री (फैजाबाद)
मुलायम सिंह यादव, श्री (इटावा)
मुस्तमन्द अली खां, श्री (मथुरा)
मोहम्मद असलम खां, श्री (सहारनपुर)
मोहम्मद वसीम अन्सारी, श्री (रायबरेली)
रफीक अहमद, श्री (उर्फ रफ्फन) (बरेली)
राकेशधर त्रिपाठी, श्री (इलाहाबाद)
राजबहादुर, श्री (जौनपुर)
राजीव कुमार सिंह, श्री (बाराबंकी)
राजेन्द्र सिंह, श्री (फर्रुखाबाद)
राम आसरे, श्री (सुल्तानपुर)
राम औतार दीक्षित श्री (हरदोई)
रामपाल वर्मा, श्री (हरदोई)
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री (बरेली)
रिछपाल सिंह बन्सल, श्री (मेरठ)
रीना कुमारी, श्रीमती (मुरादाबाद)
विजय लक्ष्मी, श्रीमती (बलिया)
बीरेन्द्र नाथ दीक्षित, श्री (कानपुर)
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री (गोरखपुर)
बीरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
वीरेन्द्र सोन, श्री (आगरा)
शतरुद्र प्रकाश, श्री (वाराणसी)
शारदा प्रसाद बिन्द, श्री (वाराणसी)
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर (कानपुर)
शूरवीर सिंह सजवाण, श्री (टेहरी-गढ़वाल)
शौनाथ सिंह, श्री (बिजनौर)
श्रीनाथ सिंह, श्री (वाराणसी)
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री (वाराणसी)
संजय सिंह, डा0 (सुल्तानपुर)
सखावत हुसैन, श्री (गाजियाबाद)
सतीश चन्द्र, श्री (आगरा)
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री (खीरी)
सैयद जावेद अली सब्जपोश, श्री (गोरखपुर)
हफीज भारती, श्री (आजमगढ़)
हर नारायण सिंह, श्री (रायबरेली)
हरशरन सिंह, श्री (मेरठ)
हरि शंकर तिवारी, श्री (गोरखपुर)
हरिश्चन्द्र, हरीशजी, श्री (बस्ती)
हरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के निधन पर शोकोद्गार

(समय 11 बजकर 05 मिनट)

***मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)–**

श्रीमन्, मैं किन शब्दों में एक अत्यन्त हृदय विदारक समाचार से इस परम सम्मानित सदन को अवगत कराऊं कि हमारे उत्तर प्रदेश के ज्वाजल्यमान नक्षत्र जो भारत की राजनीति में, उत्तर प्रदेश की राजनीति में, पिछले दशकों में जिनका एक अग्रणी के रूप में स्थान रहा, वे एक महान राजनीतिज्ञ थे, कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, एक ओजस्वी प्रशासक थे, एक जाने-माने पार्लियामेन्टेरियन थे, लाखों कार्यकर्ताओं को पहचानने की शक्ति रखने वाले थे, गांव के एक कार्यकर्ता के जीवन से उठने वाले, केन्द्र के स्तर तक पहुंचने वाले, एक महान राजनीतिज्ञ श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा के निधन के समाचार से मैं इस सदन को कैसे अवगत कराऊं। लेकिन, यह मेरा दुखद कर्तव्य है कि मैं सदन को यह सूचित करूं कि अभी दिनांक 17 मार्च को ओहियो स्टेट-क्लीवलैण्ड अस्पताल में हमारे बहुगुणा जी का देहावसान हो गया। अभी चार दिन पहले श्रीमन् मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था, मैंने अपनी ओर से और सदन के नेता के रूप में उनसे टेलीफोन पर बात की थी। मैं नहीं जानता था कि यह मेरी अंतिम बातचीत होगी उनसे। मैंने अपने यहां टेलीफोन मिलाने को कहा था कि पता लगे स्वास्थ्य कैसा है, सीधे ही टेलीफोन मिल गया। उनकी आवाज में वही कशिश थी, वही जीवन्त शक्ति थी वही आत्म बल था। उन्होंने कहा था तिवारी जी सबको याद कीजियेगा, मैं ठीक हूं, ठीक हो जाऊंगा। उनका संघर्षपूर्ण जीवन रहा, उन्होंने मृत्यु से भी संघर्ष किया।

मुझे 40–45 वर्ष पहले की बात याद आ रही है, जब सुल्तानपुर जेल से वे छूटकर आ गये थे, इलाहाबाद जंक्शन पर इलाहाबाद के छात्रों की ओर से उनका स्वागत करने के लिये मौका मिला था। उन्हें प्लूरिसी हुई थी। सुल्तानपुर जेल में वही बंदी रखे जाते थे, जो प्लूरिसी के मरीज थे। उनकी 40-45 वर्ष की आयु थी। स्वास्थ्य खराब होने की वजह से कभी रुकावट नहीं देखी, बीमारी में वे संघर्ष करते रहे। पहले प्लूरिसी के मरीज हुए थे। उनको हृदय रोग बहुत समय से था। मुझे याद है जब मुख्य मंत्री थे वे सन् 1974 में उन पर एन्जाइना का आक्रमण हुआ था। लेकिन उन्होंने हंसते-हंसते इस गम्भीर बीमारी का सामना किया और राजनीतिक खतरे मोल लिये। वह बराबर खतरों से खेलते रहे। उतार-चढ़ाव जितने बहुगुणा जी ने देखे उतने शायद किसी ने नहीं देखे। वह इन उतार-चढ़ाव से प्रेरित हुए और हमारे उत्तर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास में, प्रशासनिक इतिहास में और देश के राजनीतिक इतिहास में कई उतार-चढ़ाव में उनका मुख्य योगदान रहा। वह बराबर खतरों से जूझते रहे। वह राजनीति का निर्माण करने वाले लोगों में से थे, वह जहां भी रहे, उन्होंने अपना स्थान बनाया। ऐसी हर जगह स्थान बनाने की क्षमता जो मैंने उनमें देखी, वह बहुत कम लोगों में, आज की पीढ़ी में देखने में आती है। अपनी योग्यता, प्रभाव, स्मरण शक्ति और विचारों की तीव्रता से, जहां भी वह गये, अपना स्थान बनाया। वह समाजवादी विचारधारा के थे और कभी भी उन्होंने समझौता नहीं किया। गढ़वाल के करीब बुधानी गांव के एक मेहनतकश, गरीब परिवार से वह निकले, और पर्वतीय जीवन की कठिनाइयां देखीं। उन्होंने मेहनतकशी का जीवन देखा। उन्होंने कोई पब्लिक स्कूल में नहीं पढ़ा। वहां से निकलकर वह देहरादून आये, देहरादून से इलाहाबाद आये और वहीं से 1942 के आन्दोलन में एक छात्र नेता के रूप में सामने आये।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

अंग्रेजी राज्य में बहुगुणा जी को जीवित या मृत रूप में पकड़ने वाले को 5000/- रुपये का इनाम रखा गया था। जब वह इलाहाबाद से जेल गये, तब एक ही छात्र नेता का नाम था, लाल पदमधर जी। सन् 42 के आन्दोलन में उन्होंने जान की बाजी लगा दी। उस समय बहुत कम लोगों का अन्डरग्राउण्ड एक्टीविटीज में नाम था, जैसे अरुणा आसफ अली, राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण आदि। इस अन्डरग्राउण्ड मूवमेंट में इलाहाबाद से अग्रणी थे, बहुगुणा जी और बनारस से थे गैरोला जी। आई0एन0टी0यू0 में उन्होंने एक नेता के रूप में अपना स्थान बनाया। उसके बाद वह यहां की विधान सभा में एक विधायक के रूप में आये और धीरे-धीरे आगे बढ़े। उसके बाद सन् 1957 में सभा सचिव हुये, उपमंत्री हुये, फिर केन्द्र में संचार मंत्री हुए, यहां वित्त मंत्री हुए, कुछ समय के लिये उसके बाद 11 महीने विरोधी दल में सक्रिय रहे और संगठन के प्रणेता के रूप में रहे। तब बाबू बनारसी दास जी और बहुगुणा जी थे। दो दशकों तक लगातार उनका यहां योगदान रहा, इस समय यह सबको याद है कि किस तरह उनका योगदान यहां था। अब बाबू बनारसी दास जी भी नहीं हैं। हजारों कार्यकर्ताओं को नाम से पुकारने की स्मरण शक्ति उनमें थी, एक-एक को पहचानने अपनाने की शक्ति उनमें थी, वह योजनाओं के बारे में चिन्तित थे। एक दिन वह अकस्मात हमारे घर पर कालीदास मार्ग आये, बिना किसी सूचना के। मैंने उनसे कहा, कोई खबर नहीं, कोई सूचना नहीं, उन्होंने कहा मैं आपके घर तो आ ही सकता हूं। उन्होंने कहा आठवीं योजना कैसे बने, वैसे जो आप बनायेंगे, वह ठीक है, लेकिन मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। उन्होंने पूछा आपको कब समय है। आज मुझे इतना दुख लग रहा है कि उत्तर प्रदेश की आठवीं योजना, उनसे वंचित रह गयी। उन्होंने कहा था कि मेरे कुछ विचार हैं और आशा है, आप मेरी बात समझेंगे, उससे आज हम लोग वंचित रह गये। आज भी उनके तमाम पत्र चले आ रहे हैं, मेरे पास। सैकड़ों चिट्ठियां वह कार्यकर्ताओं की दस्तखत कर गये थे, और वह आज भी मेरे पास दिल्ली से आ रही हैं। उनके अन्दर बहुत चिन्ता थी, कार्यकर्ताओं के बारे में, उनकी समस्याओं के बारे में, बिजली के बारे में रोजाना 10-10 चिट्ठियां अभी भी मेरे पास उनकी चली आ रही हैं। क्या-क्या कहें, श्रीमन्, यह अवसर नहीं है, इतिहास मूल्यांकन करेगा, जो वह कर गये हैं, हमारे प्रदेश की राजनीति में, देश की राजनीति में, इतिहास उसका मूल्यांकन करेगा। यह अवसर नहीं है कि हम उसका सही मूल्यांकन कर सकें। लेकिन उनके व्यक्तित्व, कृतित्व का, उनके असाधारण व्यक्तित्व का लेखा-जोखा इतिहास करेगा।

मैं श्रीमन् अपनी अत्यन्त भावभीनी श्रद्धांजलि जिसके लिये शब्द नहीं बन पड़ रहे हैं, कि किन शब्दों में अपने बड़े भाई, अग्रज, जिनका 45 साल का साथ था, उनका हमारा जब कभी वह मिलते थे, तो एक अद्भुत साहस उनकी आंखों से टपकता था कभी लगता नहीं था उनका राजनीतिक विरोध हो सकता है, या है। और हमेशा एक बड़े भाई के रूप में मेरे लिए उनका आशीर्वाद था और साथ ही इस सदन में बैठे हुए अनेक साथियों के लिए भी। उनके विरोध में भी एक माधुर्य था, कहीं पर कोई कड़ुवाहट नहीं थी। वह अपनी बात को सामने कहते थे, पीछे कहने वाले व्यक्ति वह नहीं थे। वह मुझसे कह देते थे कि तिवारी जी आपने यह गलती की है, इसलिए मैं आपसे नाराज हूं। आप मेरे भाई हैं आपने यह गलती की है, इसलिए मैंने कह दिया अब आगे ऐसी गलती न

कीजिएगा। आज हमको कहीं ऐसा मिलता है? बहुगुणा जी हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महान व्यक्ति हैं, एक असाधारण व्यक्ति और एक चमत्कृत करने वाली उनकी घटनायें थीं। उनके व्यक्तित्व, अनुभव व उनकी विलक्षणता सदन के करीब-करीब प्रत्येक माननीय सदस्य को याद होगी या याद आ रही होगी जो हम लोगों के साथ किसी न किसी संदर्भ में और किसी न किसी क्षण जुड़ी हुई होगी। ऐसे वक्त पर हम सबको ऐसे एक साथी की अवश्य याद आ रही होगी।

उनमें स्वाभिमान की भावना बहुत थी। उन्होंने कहा भी कि तिवारी जी मैं स्वाभिमान के साथ राजनीति का समझौता करने की कोशिश करता हूं, परन्तु ऐसे मौके आते हैं जब मैं स्वाभिमान को अधिक महत्व देता हूं। यह बहुत से नेताओं में मैंने देखा है। वह विलक्षण थे, स्वाभिमान के धनी थे। इस मायने में वह पर्वत पुत्र थे।

इस विधान सभा की जो कार्यवाहियां हैं, वे भरी पड़ी हुई हैं उनके सन्दर्भ में वाक्-शक्ति से, उनकी क्षमता से और उनकी पार्लियामेन्ट्री पद्धति से। समय आयेगा और उनका आकलन होगा तथा उनका प्रकाशन भी होगा। उनकी याद को किस प्रकार बनाये रखा जाय इस पर हम लोग विचार भी करेंगे। मेरे बड़े भाई और इस सदन में बैठे हुए सभी सम्मानित सदस्यों के अग्रज बन्धु श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जी की पावन स्मृति में श्रद्धांजलि के के फूल हम सब समवेत होकर चढ़ाते हैं। बहुगुणा जी चले गये। उनकी याद हम सबको जीवन में आलोकित करती रहेगी। हम सबको जाना है लेकिन आगे के लिए, जो चलती हुई पीढ़ियां हैं और चलती हुई जो राजनीति है तथा जो मिसालें हैं, जो उदाहरण हैं, वह हम सब छोड़ जाते हैं दूसरों के लिए। हम स्वयं जिनसे प्रेरित हों और जो हमारे लिए उदाहरण होते हैं।

उजाले अपनी यादों को हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाये।।''

*नेता विरोधी दल (श्री सत्यपाल सिंह)–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन ने श्रद्धेय बहुगुणा जी के निधन पर उनके जीवन क्षेत्र से संबंधित उनके राजनैतिक और सार्वजनिक तथा सामाजिक जीवन के विषय में जो विस्तार से सदन को अवगत कराया है, उससे मान्यवर, मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। नेता सदन काफी समय तक उनके साथ अपने जीवन में रहे। मुझे भी मान्यवर, ख्याल है, वर्ष 1974 में इस सदन के अन्दर जब मैं विपक्ष में बैठता था, उस समय माननीय श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे और हमारे वर्तमान मुख्य मंत्री जी उस समय वित्त मंत्री थे। ये दोनों ही लोग, हम जैसे नये लोगों की निगाहों में एक गतिशील और योग्यता के प्रतीक माने जाते थे। उनकी योग्यता की छाप और उनकी विनम्रता की छाप, मैंने स्वयं अपने जीवन में उस समय देखी कि चौधरी चरण सिंह जी जब यहां पर प्रतिपक्ष के नेता की हैसियत से बैठे थे। सामान्य प्रशासन पर भाषण प्रारम्भ कर रहे थे। चौधरी साहब ने कोई सूचना कृषि विभाग के निदेशक से चाही थी, वह समय से नहीं मिल पायी। बहुगुणा जी मुख्य मंत्री की हैसियत से बैठे थे, अपना भाषण प्रारम्भ करने से पहले उन्होंने यही एतराज उठाया कि आपकी सरकार जो हमारे संवैधानिक अधिकार हैं,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उसकी ओर भी ध्यान नहीं दे रही है और हमारे सूचना मांगने के बावजूद भी हमें सूचना नहीं भेजी गयी । एक बार नहीं अनेकों बार स्वर्गीय बहुगुणा जी ने इसी सदन में चौधरी साहब की वरिष्ठता, उनकी योग्यता और भारीपन को देखते हुए बहुत ही विनम्रता से खेद व्यक्त किया था और स्वीकार किया था कि प्रशासनिक अधिकारियों की ढिलाई है । वह गतिशील व्यक्तित्व के धनी थे । वह देश और प्रदेश के अन्दर एक कुशल प्रशासक के रूप में भी जाने जाते हैं । उनके निधन से आज ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे राजनीतिक क्षितिज से एक चमकते हुए सितारे का अवसान हो गया हो ।

वह कई बातों में अद्वितीय थे । जो हमारा अल्पसंख्यक वर्ग है उसके प्रति उनके दिल और दिमाग में इतना मोहब्बत और प्यार था, धर्म निरपेक्षता थी, कभी उन्होंने हिन्दू और मुसलमान के बीच फर्क को नहीं जाना । हमेशा उर्दू के विकास के लिये, अल्पसंख्यकों के विकास के लिये इतना घुलमिलकर काम किया कि हिन्दू वर्ग के लोग भी कहने लगे थे कि वह मुसलमान समुदाय के हैं। यह उनकी "सिक्यूलेरिज्म" का प्रतीक था । जैसा नेता सदन ने बताया यह सही है कि डी0 ए0 वी0 कालेज, देहरादून से लेकर इलाहाबाद के विश्वविद्यालय में जब वह पढ़ते थे, जैसी आपको जानकारी है, छात्र नेता के रूप में उनको जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिये 5000 रु0 का पुरस्कार उस समय की अंग्रेजी सरकार ने उनके ऊपर घोषित किया था । इससे साफ प्रतीत होता है कि वह कितने बड़े क्रान्तिकारी व्यक्ति थे । अपने देश के सम्मान के लिये इस देश को आजाद कराने के लिये अपने प्राणों को भी बलिवेदी पर चढ़ाने में वह पीछे नहीं हटे ।

पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी के बाद मंत्री और उसके बाद मुख्य मंत्री तथा उसके बाद केन्द्र में पेट्रोलियम राज्य मंत्री तथा वित्त मंत्री भी रहे जब चौधरी चरण सिंह जी हमारे देश के प्रधान मंत्री थे । वह जिस विभाग में भी रहे कुशलता, निष्ठा और कर्मठता के साथ काम किया । जब मैं सन् 74 में था तो मैंने मुख्य मंत्री की हैसियत से वह यहां थे, मैंने कहा था कि माननीय मुख्य मंत्री जी, 69 विभाग आपके पास हैं कैसे सम्भाल पायेंगे ? एक नया सदस्य होने के बाद भी उन्होंने मेरे लिये कोई अहम् भरी बात नहीं कही थी, यही कहा था कि आपका सहयोग मिलता रहेगा तो इससे भी ज्यादा सम्भाल सकते हैं । यह निश्चित धारणा है कि वह एक राष्ट्रभक्त थे । चाहे सत्ता पक्ष में हों या विपक्ष में हों, राष्ट्रभक्ति का जोश उनके जीवन में हमेशा बना रहा । यह भी देखा कि उनमें कितनी बड़ी नैतिकता थी, 1980 में कांग्रेस से हटने के बाद जब उन्होंने कांग्रेस को छोड़ा, उन्होंने केवल पार्टी ही नही छोड़ी बल्कि जिस पार्टी के टिकट पर पार्लियामेंट के पद को हासिल किया था, उससे भी त्याग-पत्र दे दिया । उन्हें पद का, कुर्सी का कोई लालच नहीं था । जब गढ़वाल में दोबारा चुनाव लड़े तो भारी बहुमत से विजयी हुए । इससे सिद्ध होता है कि वह किसी राजनीतिक पार्टी के कारण लोकप्रिय नहीं थे बल्कि उनकी लोकप्रियता व्यक्तिगत थी । उन्हें मैदानी क्षेत्रों से उतना ही प्यार था, मोहब्बत थी जितनी कि उन्हें पर्वतीय अंचलों से प्यार और मोहब्बत थी । वे पर्वतीय क्षेत्र के लिये प्यार और मोहब्बत अपने दिल और दिमाग में समाये हुए थे । समकालीन राजनीति की बहुत बड़ी विलक्षण प्रतिभा का

अवसान हो गया है । आज से तीन माह पूर्व जब राष्ट्रीय मोर्चे की मीटिंग थी दिल्ली के आन्ध्र भवन में तब हम मिले थे । बहुत से सम्मानित सदस्य उसमें भाग लेने आये थे, प्रतिपक्ष के नेता की हैसियत से मुझे भी वहां सम्मिलित होने का अवसर मिला था । वहां पर उपस्थित सभी सदस्यों ने इस बात को कहा था कि बहुगुणा जी की विद्वता, विलक्षणता के कारण, अपनी प्रतिभा के कारण वे उसमें सबसे भारी रहे । वह उनकी प्रतिभा का प्रतीक था ।

आज उनके निधन से सारा देश शोकाकुल है । केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, उत्तर प्रदेश तो उनकी कर्मभूमि रही है । उत्तर प्रदाश के मुख्य मंत्री की हैसियत से ही नहीं, उन्होंने कांग्रेस फार डेमोक्रेसी स्थापित की । अपने जीवन के अन्तिम चरणों में भी उन्होंने सार्वभौमिकता को बनाये रखा । उनके जीवन से कर्मठता का संघर्ष-शीलता का परिचय मिलता है ।

स्वर्गीय बहुगुणा जी का जीवन उत्तर प्रदेश में रहने वालों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा । बहुगुणा जी उन कुछ लोगों में हैं जिनके नाम से ही लोग उनको जानते हैं । ऐसी विभूति हमारे बीच से उठ गयी, इससे हम सबको गहरा शोक है । मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें, हार्दिक सम्वेदनायें जो मैं अर्पित कर रहा हूं, हमारी ओर से तथा हमारी जनता पार्टी की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री राम शरण दास–

मान्यवर, कल हम लोग लाबी में थे । माननीय राजेन्द्र सिंह जी को बाहर से खबर लगी थी, वे हम लोगों के बीच में आये और कहा कि एक बहुत बुरी न्यूज है । मान्यवर, जब उन्होंने कहा कि श्री एच0 एन0 बहुगुणा जी अब इस दुनिया में नहीं रहे तो मान्यवर, मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि बहुगुणा जी इतनी जल्दी हम लोगों के बीच से चले जायेंगे ।

मान्यवर, बहुगुणा जी महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, देश भक्त थे, बहुत बड़े बुद्धिमान थे, अच्छे प्रशासक के अलावा श्रीमन्, वे गरीबों के नेता थे । जब वे हमारे दल में आए तो एक शिविर में, देहरादून में पहली बार उनके भाषण को सुना, मुझे तब उनका भाषण सुनने का मौका मिला, मैं उनके साथ था । मैं सोच भी नहीं सकता था क्योंकि बहुगुणा जी के बारे में तरह-तरह की बातें हुआ करती थीं, लेकिन मान्यवर, जिस दिन मैंने उनका भाषण देहरादून में सुना, मैं समझ बैठा कि आज जैसे डाक्टर लोहिया हम लोगों के बीच में बोलते थे, उसी प्रकार एक बुद्धिजीवी हम लोगों के बीच में है । खास तौर से पर्वतीय इलाके का चित्र उन्होंने हमारे बीच में खींचा, उसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते थे । जब वे कह रहे थे तो उनकी आंखों में आंसू आ गये । उन्होंने कहा कि तुम मैदानी इलाके में रहने वाले लोग क्या जानते हो ? मेरी मां घास का गट्ठर सर पर रखकर 80 सीढ़ियां पहाड़ों की उतरती थीं, बीच में कई दफा पगडंडियों पर बैठती हुई. उस गरीब घर के पले हुए यह बहुगुणा जी थे, जो बहुत ही महान नेता थे, इनके न रहने से आज बहुत बड़ी क्षति देश व प्रदेश की हुई है, लेकिन विपक्ष

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

को जो क्षति हुई है, उसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है, हम लोगों से वह अलग जरूर थे, लेकिन हमारा पक्का यकीन था कि वह निकट भविष्य में हम लोगों के बीच जरूर आयेंगे और हम लोगों का मार्ग दर्शन करेंगे । वे बहुत ही सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे जैसा कि माननीय नेता विरोधी दल ने कहा कि जब उन्होंने कांग्रेस छोड़ी और जिस कांग्रेस के टिकट पर जीत कर आए थे उसे भी त्याग दिया और फिर आचार्य नरेन्द्र देव के रास्ते पर चलकर इस्तीफा देकर पुनः जीतकर आये । हम लोगों के उनके पास बहुत ज्यादा बैठने का मौका तो नहीं मिला और जब वह चीफ मिनिस्टर रहे, तो मुझे कभी भी उनके पास जाने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट न हुई और जब भी मैं उनसे मिलने गया, हर बार वह अपनी एक अलग छाप मिलने वालों पर छोड़ते थे और यही नहीं बहुगुणा जी से कोई भी मिलने वाला कभी भी नाराज होकर नहीं लौटता था । यह उनकी एक बहुत बड़ी खूबी थी । इनके न रहने से श्रीमन्, जो हमारे प्रदेश को क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होना असंभव है । मान्यवर, हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर श्री बहुगुणा जी के आकस्मिक निधन के समाचार से आज सम्पूर्ण राष्ट्र स्तब्ध है, शोकाकुल है और आज करोड़ों आंखें नमी लिए हुए आकाश की ओर उठी हुई दिखाई दे रही हैं क्योंकि आज बहुगुणा जी समय से पहले हम लोगों के बीच से चले गये और यह सच है कि जैसा कि हमसे पहले बोलने वाले वक्ताओं ने कहा कि वह पहाड़ी क्षेत्र में एक साधारण परिवार में जन्में और गढ़वाल की तेज प्रवाह के साथ इलाहाबाद आ गये । विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्र भक्ति की भावना वह लिए हुए थे, इसी प्रचण्ड भावना से उन्होंने सदैव प्रदेश को फायदा पहुंचाया और आज उनके दिवंगत होने से एक युग का अंत हो गया । बहुगुणा जी अपने पूरे जीवन भर संघर्ष करते रहे । साथ ही विभिन्न विवादों में घिरे रहे लेकिन अभी थोड़े दिन पहले लखनऊ आए थे, उस समय लोगों के बीच अनेक प्रकार की शंकाएं व्याप्त थीं तो उन्होंने सभी की शंकाओं को यह कहकर कि "स्व धर्मे निधनं श्रेयः" मैं अब प्रतिपक्ष का हूं और प्रतिपक्ष में ही रहूंगा । माननीय नेता सदन ने इनके बारे में बड़े विस्तृत रूप में प्रकाश डाला । मुझे इनके नजदीक बैठने का सौभाग्य प्राप्त तो नहीं हुआ लेकिन बहुत करीब से उनको बार-बार देखने का अवसर मिला है । वह राजनीति क्षेत्र में काम करने वालों के लिए प्रेरणा थे, जो हमारे बीच से चले गए, उनके जाने से यह प्रतीत होता है कि एक बहुत बड़ा राजनीतिक स्तम्भ हम लोगों के बीच से उठ गया । इन्हीं शब्दों के साथ जो माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य माननीय नेताओं ने इनके प्रति जो विचार प्रकट किए, उनसे मैं अपने आप को सम्बद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार में तो 2-4 लोगों का ही होना तो अपनी जगह पर है लेकिन सम्पूर्ण राष्ट्र उनका परिवार है । हम सब उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । आपसे प्रार्थना है कि मेरी शोक संवेदनायें उनके परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री राम चन्द्र बख्श सिंह–

मान्यवर, बहुगुणा जी की मृत्यु के समाचार से हम सभी लोगों को कष्ट हुआ है । मान्यवर, इस माननीय सदन में जब मैं पहली बार 74 में चुन कर आया था तो बहुगुणा जी सदन के नेता और प्रदेश के मुख्य मंत्री थे । मुझे उनको सदन के अन्दर और सदन के बाहर सुनने का मौका मिला और निकट से देखने का भी मैं महसूस करता हूं कि जैसा उनका नाम बहुगुणा था, वैसे ही वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे । वह महान देश भक्त, कुशल प्रशासक तथा श्रेष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । वह जिन्दगी भर चाहे सत्ता पक्ष में रहे या विपक्ष में रहे, सत्ता के बाहर रहे या सत्ता के अन्दर रहे, वे सदैव किन्हीं मूल्यों और आदर्शों के लिए संघर्ष करते रहे और यह संघर्ष उनके जीवन के अन्त तक चलता रहा । बहुगुणा जी के निधन पर राजनैतिक जीवन में और सामाजिक जीवन में अपार रिक्तता पैदा हो गयी है। खासतौर से जब उनकी आवश्यकता थी । वह इस दाश के धर्म निरपेक्ष शक्तियों के अगुवा थे । जो माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी, श्री रामशरण दास और श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त जी ने इनके बारे में विचार व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे मेरी प्रार्थना है कि मेरी संवेदना सन्देश उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री कौशिक रमा शंकर–

माननीय अध्यक्ष जी, श्रद्धेय बहुगुणा जी हम लोगों के बीच नहीं रहे । उनके चले जाने से हमारे देश की राजनीतिक क्षेत्र और सामाजिक क्षेत्र की अपार क्षति हुई है और उत्तर प्रदेश की तो यह अपूर्णीय क्षति हुई है । श्रीमन्, वह अद्भुत स्मरण शक्ति और विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति थे । सर्वधर्म समानत्व के सिद्धान्त के एक अग्रणी प्रणेता ही नहीं अपितु साधक भी थे ।

मान्यवर, दलगत राजनीति की वर्तमान सर्वमान्य व्यवस्था में वह किसी दल के साथ क्यों न सम्बद्ध रहे हों, लेकिन उन्होंने अपने विचार और अपनी मान्यताओं को कभी नहीं छोड़ा । अपने सिद्धान्तों और विचारों के प्रति वह सदैव समर्पित रहे । श्रीमन्, विचारधारा के तथाकथित वर्गीकरण में वह बड़े साहस के साथ हमेशा वामपंथी और समाजवादी विचारधारा के पोषक रहे ।

श्रीमन्, वस्तुतः हम सब लोगों को उनके चले जाने से बड़ा दुख है । हमारे उत्तर प्रदेश में ही, उन्होंने छात्र जीवन से राजनीति में प्रवेश किया, छात्रों के आन्दोलन और मजदूरों के आन्दोलन से वह आबद्ध होते हुए 1952 में इस विधान सभा के सदस्य बने और संसदीय सचिव, उप मंत्री, मंत्री और मुख्य मंत्री के पदों पर आसीन होकर हमारे प्रदेश की सेवा की । श्रीमन्, मुख्य मंत्री के पद पर आसीन रहते हुए उन्हें केवल दो वर्ष सेवा करने का मौका मिला, लेकिन इतने समय में ही उनकी जो छाप हमारे प्रदेश की राजनीति और प्रदेश के प्रशासन पर डाली, वह अद्भुत थी । उनकी कुशलता, प्रशासन पर उनकी पकड़, मजबूती के साथ उसका संचालन, हमेशा याद किया जाता रहेगा । उनके निधन पर जो शोकोद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त

किए हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी ये संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री राज किशोर सिंह–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय हेमवती नन्दन बहुगुणा के निधन के समाचार से हम सब लोग दुखी हैं । यह किसी को उम्मीद नहीं थी कि अमेरिका में अपनी चिकित्सा के लिए गए हुए बहुगुणा जी का इस तरह से दुखद समाचार हम लोगों को मिलेगा । मान्यवर, उनके निधन से आज पूरा राष्ट्र शोकाकुल है और हम सब लोग दुखी हैं । मान्यवर, वे एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे और एक कुशल राजनेता थे । वे छात्र जीवन से ही आजादी की लड़ाई गुलामी के खिलाफ की विचारधारा से ओत-प्रोत थे और इसीलिए वे छात्र जीवन से ही राजनीति में चले आये और लगातार राजनीति में जीवन के अंतिम क्षणों तक रहे । कई मर्तबे वे आजादी की लड़ाई में जेल भी गए और उन्हें अंग्रेजी हुकूमत ने जिन्दा पकड़ने के लिए 5 हजार रुपए का इनाम भी घोषित किया था ।

मान्यवर, वे सम्पूर्णानन्द मंत्रिमंडल के समय सभा सचिव के रूप में काम किये, बाद में उप मंत्री हुए और उसके बाद मंत्री हुए तथा उसके उपरान्त वे हमारे प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे । वे कई मर्तबे इस विधान सभा में भी चुनकर आए और लोक सभा में भी चुनकर गए थे । वे अल्पसंख्यकों के मसीहा थे और उनकी इनके प्रति बड़ी निष्ठा थी । वे उनमें बहुत ही लोकप्रिय भी थे, मान्यवर, वे न केवल जब वे कांग्रेस में थे कांग्रेस के ही समर्थक थे विचारधारा कुछ और ही थी और वे विपक्ष की विचारधाराओं से भी बराबर सम्पर्क रखते थे । कांग्रेस से निकलने के बाद वे कांग्रेस फार डेमोक्रेसी में शरीक हुए और उसके बाद जनता राज में मंत्री भी रहे । जनता पार्टी के बाद वे लोकदल में शरीक हुए और जीवन के अंतिम क्षणों तक लोकदल (ब) के अध्यक्ष रहे । उनके निधन से हमारे प्रदेश में जो राजनीति में रिक्तता आई है उसका पूरा होना मुश्किल है ।

आज हमारे देश की संकटपूर्ण स्थिति में बहुगुणा जैसे राजनेता की बहुत बड़ी आवश्यकता थी । उनके निधन से हमारे देश और हमारे प्रदेश में जनवादी आन्दोलन को बहुत बड़ा धक्का पहुंचा है । मान्यवर, हमारा दल और हम सब लोग बहुत दुखी हैं और उनके निधन से मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री राम आसरे वर्मा–

मान्यवर, श्रद्धेय बहुगुणा जी नहीं रहे । कल जैसे ही यह समाचार हम लोगों को मिला, जिस-जिस को भी मिला वह स्तब्ध होकर रह गया । मान्यवर, करोड़ों आंखें डबडबा आईं । किसी के व्यक्तित्व की उसके न रहने के बाद ही ज्यादा पहचान मिलती है । मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था तीन बार उनसे भेंट करने का और इन तीन मुलाकातों में उनके व्यक्तित्व ने जो छाप मुझ पर छोड़ी वह बयान नहीं की जा सकती है।

मान्यवर, उनका महान व्यक्तित्व, उनका कृतित्व और उनका चिंतन हम सब के लिये प्रेरणा के स्रोत रहेंगे । उन्होंने जीवन में अपने चिंतन के साथ अपने सिद्धान्तों के साथ कभी भी समझौता नहीं किया और उसी के परिणाम समय-समय पर देखने को मिले । और राजनीतिक क्षितिज पर ऐसे भी मौके आये जब श्रद्धेय बहुगुणा जी अकेले ही खड़े हुए मिले और उस स्थिति में भी वह विचलित नहीं हुए । अपने चिंतन और सिद्धान्तों के मुताबिक उन्होंने अपना रास्ता तय किया । आज जिस समय पूरे राष्ट्र को ऐसे नेता की जरूरत थी उस समय हमारे बीच से वह उठ गये । मान्यवर, जब पूरे राष्ट्र में विपक्षी एकता का अभियान चल रहा है उस विपक्षी एकता के सिलसिले में उनकी जो समझ थी एक समान कार्यक्रम तथा सामूहिक नेतृत्व की जो भावना थी उस पर भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था उनसे बात करने का । मैंने देखा उनके विचार थे कि बिना ठोस आधार के बनी हुई विपक्षी एकता बनावटी होगी वह टिकाऊ कदापि नहीं हो सकती । आज देश को ऐसे ही नेता की जरूरत थी जो राष्ट्र को पथ प्रदर्शन देता । ऐसे मौके पर हमारे बीच से श्रद्धेय बहुगुणा जी उठ गये उसके लिए हम सब दुखी हैं।

मान्यवर, ऐसे महान विभूति के प्रति मैं अपनी ओर से और निर्दलीय विधायकों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं द्वारा जो उद्गार व्यक्त किये गये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी ओर से भी श्रद्धा पुष्प उनके शोक संतप्त परिवार तथा उनके निकटजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, कल मुझे रिक्शा चालक के मुंह से बहुगुणा जी के इन्तकाल की सूचना मिली, मुझे हिम्मत नहीं पड़ी कि उससे फिर से पूछूं । मैं सीधे लॉबी में आया और लोगों ने बताया कि बहुगुणा जी का इंतकाल हो गया है । बहुगुणा जी का आम आदमी से कितना लगाव था कि रिक्शावाले को भी उनके मरने का गम था । मुझे याद है कि 1974 में जब वह मुख्य मंत्री थे तो एक आदमी मेरे पास आया उसे कुछ दुख और परेशानी थी, वह नंगे पैर और गंदा कुर्ता तथा फटा पैजामा पहने था उसने कहा मुझे मुख्य मंत्री जी से कुछ कहना है मैं उनसे मिलना चाहता हूं । मुझे उसको लेकर जाने में खुद शर्म आ रही थी उसने जिद की मुझे उनसे मिलना है उसकी जिद को देखते हुए मैं ले गया । बहुगुणा जी बड़ी मोहब्बत से उससे मिले और उसकी बातें सुनी और कहा कि कितनी देर गोण्डा जाने में लगती है उसने कहा 4 घंटे लगेंगे । तो उन्होंने उससे कहा तुम गोण्डा पहुंचोगे उससे पहले तुम्हारा काम हो जायेगा । मैं समझता था कि मुख्य मंत्री और नेता ऐसा ही वादा करते हैं। लेकिन उस आदमी ने मुझे बताया कि हमारे पहुंचने से पहले हमारा काम हो चुका था । तो वह कितने कुशल प्रशासक थे ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

आम तौर से कहा गया कि वह माइनोरिटी के मसीहा थे । मान्यवर, असली बात यह है कि वह एक न्यायप्रिय शख्सियत थे । माइनोरिटी को न्याय नहीं मिल रहा था, तो बहुगुणा जी ने अपने नेतृत्व में अपने मुख मंत्रित्व में उनको न्याय दिलाया और जो सम्भव था वह उन्होंने उनके लिये किया । बहुगुणा जी मैदाने सियासत पर जो आसमान छाया हुआ था, उसका सूरज कभी चमका, घरों में रोशनी आई अंधेरों में, वह सूरज कभी बादलों में छुपा और परसों वह सूरज गुरूब हो गया । आगे जब कभी भी सियासत और इतिहास व अखबार के पन्ने पलटे जायेंगे, वह गरीबों का मसीहा हमेशा याद किया जाएगा । हमारी यह याद उन करोड़ों लोगों तक पहुंचाने की कृपा करें, जो आज गमजदा हैं।

*श्री देव कुमार यादव–

मान्यवर, जो यहां आया है, उसे एक न एक दिन यहां से जाना ही पड़ता है । लेकिन करोड़ों वर्षों के इतिहास में कुछ ही ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो इतिहास के पन्नों में और इंसान के दिलों में जीवित रहते हैं। मान्यवर मैं माननीय बहुगुणा जी को इसी श्रेणी के उन महापुरुषों में जोड़ता हूं, जिनको इतिहास और समय सदैव याद रखता है, और समय के क्रूर चक्र में जिनका व्यक्तित्व कभी विलीन नहीं होता है। बहुगुणा जी के निधन के साथ न केवल एक व्यक्ति का अन्त हुआ है, बल्कि एक युग का समापन मान्यवर, हो रहा है। मान्यवर, एक नेहरू और गांधी का युग था और उन समर्पित लोगों का युग था, जिन्होंने इस देश के मुक्ति संघर्ष में अपनी आहुतियां देकर इस देश को आजाद किया और उसके निर्माण में भी अन्त तक आखिरी सांस तक लगे रहे, उसका अन्त हो गया है। बहुगुणा जी का ऐसा व्यक्तित्व था, जिसके सम्बन्ध में चन्द शब्दों में कुछ कहा नहीं जा सकता है। कल जब हमने यह सुना, तो मैं समझता हूं कि यह दुख किसी एक व्यक्ति का नहीं है, इस देश के 80 करोड़ लोगों का और विश्व में तमाम उनके समर्थकों का व्यक्तिगत दुःख है । मैं पहली बार सन् 74 में इस माननीय सदन में एक एक विद्यार्थी के रूप में आया था । इसके पहले ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र के रूप में दर्जनों बार उनके दर्शन करने का और सुनने का अवसर मिला था ।

इस सदन में जहां तिवारी जी विराजमान रहते हैं, वहां बहुगुणा जी बैठते थे–दाहिने जहां तिवारी जी बैठते हैं, और माननीय नेता विरोधी दल के स्थान पर माननीय चौधरी साहब बैठते थे ।

मान्यवर, हर सदस्य के लिए, जो यहां चुनकर आता है, यह सदन एक स्कूल भी होता है। जब मैं पहली बार यहां आया, नेता सदन पर जब कुछ ऐसे प्रहार करते थे कि यह सदन अस्त-व्यस्त हो जाता था, आक्रोश में डूब जाता था, तब मैं देखा करता था कि बहुगुणा जी ऐसी स्थिति में कैसे कदम उठाते थे, सारा वातावरण सब कुछ शान्त हो जाता था। जब भी वह खड़े होते थे, ऐसी कोई बात कहते थे कि सारी उत्तेजना खत्म हो जाती थी और सदन ठहाकों में डूब जाता था। मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। जब

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

वह मुख्य मंत्री पद से इस्तीफा देकर मीराबाई मार्ग पर आए, तो उस समय संयोग से मैं उनके साथ बैठा हुआ था, उस समय एक विक्षिप्त दिखाई देने वाला व्यक्ति उनके यहां आकर उनसे मिलने की जिद करने लगा। उनके अंगरक्षक उसको रोके रहे थे और वह चिल्ला रहा था, बड़ा शोर हो रहा था । मैंने यह दृश्य बाहर निकल कर देखा तो बहुगुणा जी से कहा कि कोई व्यक्ति आपसे मिलना चाहता है, लेकिन लगता है कि उसका मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं है। तो उन्होंने तुरन्त अपने बाडीगार्ड से कहा उसे आने दो। वह अन्दर आया तो बहुगुणा जी ने उससे हाथ मिलाया और कहा भाई जान क्या हुक्म है। उसने कहा मैंने आपके भोजन की व्यवस्था कर रखी है, चौक में रहने वाला हूं थाली परोस कर आया हूं आप तुरन्त चलिए उन्होंने उस व्यक्ति को गले लगाया और कहा कि आप मुझे दो मिनट का समय दे दें, मेरे मित्र बैठे हैं आप चलिए मैं अभी आ रहा हूं। वह व्यक्ति खुशी-खुशी घर चला गया, तो उनके गुणों के बारे में क्या कहा जाए। उनमें अद्भुत क्षमता देश को जानने की थी। किसी भी दल का कोई कार्यकर्ता हो वह हर दल के कार्यकर्ता का सम्मान करते थे। कभी भी उनके मन में अहम की भावना नहीं थी। वह मिनिस्टर के रूप में भी अपने को एक मानव ही समझते थे । यह किसी भी इंसान का सबसे बड़ा गुण है। पद और गरिमा को न देखते हुए उन्होंने अपने को एक इंसान के रूप में समझा। मैं बहुगुणा जी के प्रति अपने और अपने दल की ओर से नतमस्तक होता हूं। हमारा अकीदा है कि आगे आने वाला इतिहास उनको याद करेगा और आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा लेंगी । मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप इस सदन की शोक संतप्त भावनाओं के साथ मुझे जोड़ते हुए हमारी और हमारे दल की भावनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

*कुंवर रेवती रमण सिंह–

बहुगुणा जी, आज हमारे बीच में नहीं हैं। उन्होंने अपने जीवन की यात्रा हिमालय से शुरू की और जिसका अन्त अमरीका के हास्पिटल ओहियो में हो गया। बहुगुणा जी उन व्यक्तियों में से रहे हैं, जिन्होंने आजादी के बाद इस देश के इतिहास को समय-समय पर प्रभावित किया है। मान्यवर, जब वह हिमालय से, गढ़वाल से जब इलाहाबाद आए तो एक गरीब व्यक्ति के रूप में उन्होंने अपना जीवन प्रारम्भ किया। वह रिक्शा चलवाते थे और उसका पंचर स्वयं जोड़ते थे उन्होंने इलाहाबाद बिजलीघर गवर्नमेंट प्रेस में मजदूरों का नेतृत्व संभाला था और मान्यवर, उसके बाद वह चुनकर 1952 में लखनऊ आए। उसके कुछ दिनों बाद ही माननीय कमलापति त्रिपाठी जी के सहयोगी के रूप में जैसा कि नेता सदन ने कहा श्री राम धन और बनारसी दास दोनों नेताओं और पूरे उत्तर प्रदेश के शासन पर और उस समय के कांग्रेस संगठन पर इनका अमिट प्रभाव था कि उनका नाम प्रदेश के कोने-कोने में फैला हुआ था। मान्यवर, बहुगुणा जी ने इस भारतीय लोक-तंत्र में राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के पद को छोड़कर बाकी सभी पदों पर वह आसीन रहे और मुख्य मंत्री के रूप में मान्यवर, इस प्रदेश की जो सेवा की और इस प्रदेश की जो कुशल प्रशासक के रूप में सेवा की, उसको कहा नहीं जा सकता है। इण्डस्ट्रियल अनारेस्ट का जो वातावरण बन गया था उसको दूर किया और इस प्रदेश को नयी दिशा दी।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बहुगुणा जी जैसे बहुत कम व्यक्ति राजनीतिक क्षेत्र में मिलेंगे । मुझे याद है वह घटना 1969 की, जब कांग्रेस में डिवीजन हुआ था उस समय श्री कमलापति जी भी दुविधा में थे उनको प्रभावित करने का काम भी बहुगुणा जी ने किया । इतना ही नहीं बहुगुणा जी जहां भी रहे थे वह अपने विचार से और अपने कार्यों से लोगों को प्रभावित करते रहते थे । उनकी सोच गरीब लोगों के लिए थी, आम लोगों के लिए भी । अकलियतों के वह नेता नहीं थे, उनके मन में उनके लिए पीड़ा थी । अनुसूचित जातियों के लिए, अनुसूचित जन जातियों के लिए उन्होंने केवल बातें नहीं की, उनके लिए उन्होंने अपने कार्यकाल में, मुख्य मंत्री के रूप में जो प्रमोशन में स्थान तय किया, उनका बनाया गया नियम आज भी चला आ रहा है । यह इस बात का द्योतक है कि इन वर्गों के लोगों के प्रति उनके मन में कितनी पीड़ा थी ।

अभी कुछ दिन पूर्व उन्होंने लखनऊ में रैली की थी, यह रैली उन्होंने अपने दम पर की कोई संगठन नहीं था । उनके पास देश और प्रदेश में ऐसे लोग नहीं थे जिनके बल पर वह रैली कर सकते, लेकिन अकेले दम पर उन्होंने रैली की और अच्छी रैली की । यह इस बात का द्योतक है कि उनके अंदर अदम्य शक्ति थी संगठन की । संभवतः मान्यवर, इस रैली में उनको इतनी मेहनत करनी पड़ी जिसके कारण उनके ऊपर ज्यादा दबाव पड़ा, स्ट्रेस पड़ा और उसी का नतीजा रहा कि उनको अमेरिका दोबारा जाना पड़ा आपरेशन के लिए । मान्यवर, जैसा कि माननीय नेता सदन ने कहा, मृत्यु से भी उन्होंने लड़ाई लड़ी । आज वह हमारे बीच में नहीं हैं । मैं मुख्य मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वैसे तो वह पूरे देश के नेता थे लेकिन इस प्रदेश का, हम सभी लोगों का दायित्व उनके प्रति ज्यादा भी है । मैं आग्रह करूंगा कि उनकी स्मृति में, राजधानी में कोई भी ऐसा स्मृति चिन्ह उनके लिए बनाया जाय, खोला जाय जो आने वाली पीढ़ी को उनके विचारों से प्रेरणा देता रहे । मुझे उम्मीद है कि आप उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करेंगे ।

श्री अध्यक्ष–

बहुगुणा जी का जब पता चला कि यह दूसरा बाई पास आपरेशन है तो मेरा दिल तभी खटक गया । दूसरा बाई पास मुश्किल होता है । सिवा दुआ के और मैं कर ही क्या सकता था । बहुगुणा जी की एक अजीब हस्ती थी । उनकी जैसी राजनीतिक सूझबूझ बहुत कम लोगों में होती है । किसी के सामने कभी झुके नहीं । अपनी बात, जिसको यूं कहिए कि हाजिर जवाब थे, कम ही ऐसे लोग हमारे देश में थे । वह आज हमारे बीच में नहीं रहे । अंग्रेजों ने उनकी गर्दन पर 5 हजार का इनाम रखा था । उत्तर प्रदेश में हर पद पर वह रहे । केन्द्र में मंत्री रहे और यहां मुख्य मंत्री रहे । वह क्या नहीं रहे । साम्प्रदायिकता के वह कट्टर विरोधी थे । अब वह हमारे बीच में नहीं रहे । उनकी कमी मुश्किल से पूरी की जा सकती है । इसके साथ जो आप सबने अपने विचार व्यक्त किये, मैं अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं । आइए अब हम लोग 2 मिनट मौन खड़े होकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें ।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

श्री अध्यक्ष–

अब हम उठते हैं, 27 तारीख को 11 बजे फिर बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन 12 बजे दिनांक 27 मार्च, 1989 के दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया ।)

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ :
18 मार्च, 1989

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

पी0एस0यू0पी0–एल0 8 विधान सभा (15)--1989--813 ।